इकाई 13 मीरालहरी द्वितीय खण्ड– श्लोक 23 से 44

इकाई की रूपरेखा

13.0 उद्देश्य

13.1 प्रस्तावना

13.2 उत्तरखण्ड 23– 42

13.2.1 पति की मृत्यु के बाद मीरा की दुर्दशा

13.2.2 मीरा के पत्र का तुलसीदास प्रेषित उत्तर

13.2.3 गृह त्याग तथा मार्गजन्य कष्ट

13.2.4 मीरा का पुनः वृंदावन पहुंचना

13.2.5 मीरा के उपदेश और भक्ति का फल

13.3 सारांश

13.4 शब्दावली

13.5 सन्दर्भ ग्रन्थ

13.6 बोध प्रश्न

13.0 उद्देश्य

मीरालहरी के वर्णन की इस अंतिम इकाई का अध्ययन कर लेने के बाद आप :

- पति की मृत्यु के बाद मीरा की दुर्दशा से सम्बन्धित तथ्य बता सकेंगें।
- मीरा के पत्र का तुलसीदास द्वारा प्रेषित उत्तर का वर्णन कर सकेंगें।
- गृह त्याग तथा मार्गजन्य कष्ट का उल्लेख कर सकेंगें।
- मीरा का पुनः वृंदावन पहुंच जाने के वर्णनों का उल्लेख कर सकेंगें।
- मीरा के उपदेश और भक्ति का फल आदि को समझा सकेंगें।

13.1 प्रस्तावना

इस खण्ड की तीन इकाईयों में पूर्व में ही आप पण्डिता क्षमाराव के जीवन और उनकी शिक्षा तथा रचना संसार के बारे में सर्वप्रथम जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। दूसरी इकाई में प्रथम खण्ड से श्लोक संख्या 01 से लेकर 20 से अधिक तक के वर्णनों का आपने भली प्रकार भावार्थ रूप में अध्ययन किया है। इस खण्ड की तीसरी इकाई में आपने मीरालहरी के द्वितीय खण्ड के श्लोक संख्या 01 से 22 तक के विभिन्न वर्णनों का अध्ययन किया है। अब आप इस खण्ड की अंतिम इकाई में प्राप्त वर्णनों का अध्ययन करने जा रहे हैं।

मीरालहरी के उत्तर खण्ड के श्लोक संख्या 23 से 44 तक के तथ्यों से संकलित यह इकाई आपके अध्ययन के लिए प्रस्तुत है जिसमें सबसे पहले आप मीरा के पति की मृत्यु के पश्चात् उसके जीवन में आने वाले कष्टों से संबंधित श्लोकों का अध्ययन करेंगें। क्रमशः मार्गजन्य कष्ट की जानकारी प्राप्त करते हुए आप उन श्लोकों का अध्ययन करेंगें, जिनमें मीरा के पत्र का तुलसीदास द्वारा दिये गये उत्तर से जुड़े हुए

तथ्यों का वर्णन किया गया है। इसी के साथ–साथ मीरा का वृन्दावन दुबारा से पहुँचना, मीरा की तपस्या आदि के वर्णनों का अध्ययन आप श्लोकों में दिए गए भावार्थ के आधार पर करेंगें। अंत में भक्तों के लिए मीरा द्वारा दिए उपदेशों तथा भक्ति के लिए बताए गए फल आदि के उल्लेख के साथ श्लोक संख्या 44 तक में विभिन्न प्रकार के वर्णन आपके अध्ययन के लिए प्रस्तुत किये गए हैं।

अतः मीरालहरी के उत्तर खण्ड से श्लोकों के वर्णन का भावार्थ सहित उल्लेख की गई प्रस्तुत इकाई का अध्ययन कर लेने के बाद आप मीरा के वैधव्य जीवन से लेकर भक्ति आदि के फल तक के तथ्यों का उल्लेख करते हुए इस इकाई की विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगें।

13.2 उत्तरखण्ड 23– 42

13.2.1 पति की मृत्यु के बाद मीरा की दुर्दशा

भर्त्रानेन महात्मना वियुयुजे सा दैवदुर्योगतः
सार्धं बन्धुजनप्रदर्शितचरैः सत्कारमानादिभिः।
पत्यौ सत्यपि यस्तदेकवशगोऽप्यन्तः स्म विद्वेष्टि तां
स भ्रातास्य निपीडयेदपतिकां यद्यत्र को विस्मयः।।23।।

अन्वय – सा दैवदुर्योगतः बन्धुजनप्रदर्शितचरैः सत्कारमानादिभिः सार्धम् अनेन महात्मना भर्त्रा वियुयुजे । यः पत्यौ सत्यपि तदेक वशगः अपि ताम् अन्तः द्वेष्टि , स अस्य भ्राता यदि अपतिकां निपीडयेत् (तर्हि) अत्र कः विस्मयः।

शब्दार्थ दृ सा = वह मीरा । दैवदुर्योगतः = दुर्भाग्य के कारण । बन्धुजनप्रदर्शितचरैः = बन्धु दृबान्धवों के द्वारा पूर्व में प्रदर्शित । सत्कारमानादिभिः सार्धम् = सत्कार और मान आदि के साथ । अनेन महात्मना भर्त्रा = इस महात्मा भर्ता भोजराज से । वियुयुजे = वियुक्त होगयी । यः पत्यौ सत्यपि = जो पति के जीवित रहने पर भी । तदेकवशगः अपि = एकमात्र उसके आश्रित होकर भी । ताम् अन्तः द्वेष्टि = मीरा से द्वेष रखता था । स अस्य भ्राता यदि अपतिकां = वह उसका देवर पतिविहीन मीरा को । निपीडयेत् = यदि पीड़ा पहुँचाये । अत्र कः विस्मयः = इसमें क्या आश्चर्य।

अनुवाद – वह मीरा दुर्भाग्य के कारण अपने महात्मा पति भोजराज से वियुक्त हो गयी (भोजराज की मृत्यु हो गयी)। इसी के साथ वह बन्धु दृ बान्धवों के द्वारा प्रदर्शित सत्कार और मान दृ सम्मान से भी वंचित हो गयी । उसका जो देवर पति के होने पर भी तथा उसके अधीन होने पर भी मीरा से द्वेष रखता था , वह अब यदि उस अपतिका को पीड़ित करता है तो इसमें क्या आश्चर्य ?

संप्राप्य क्षितिपालतापदमसौ मीरां जिघांसुर्व्यधा–
न्नानापैशुनपापकूटरचनाः पूर्वं कदाप्यश्रुताः।
यत्तेन प्रतिकूलबुद्धिरचितं तस्या हितायैव तद्
जातं साऽप्यभया जगौ गुणगणान् दीनावनश्रीपतेः ॥ २४॥

अन्वयः – असौ क्षितिपालतापदं सम्प्राप्य मीरां जिघांसुः पूर्वं कदाऽप्यश्रुताः नानापैशुनपापकूटरचनाः व्यधात् । तेन यत् प्रतिकूलबुद्धिरचितं तत् तस्या हिताय एव

जातम् । सा अपि अभया दीनावनश्रीपतेः गुणगणान् जगौ ।

शब्दार्थ दृ असौ = मीरा का यह देवर । क्षितिपालतापदं सम्प्राप्य = राजपद पाकर । मीरां जिघांसुः = मीरा को मारने की इच्छा से । पूर्वं कदाऽप्यश्रुताः = पहले कभी न सुनी गयी । नानापैशुनपापकूटरचनाः = अनेककपट और पाप की कूट रचनायें । तेन यत् प्रतिकूलबुद्धिरचितम् = उसके द्वारा प्रतिकूल बुद्धि से जो रचा गया । तत् तस्या हिताय एव जातम् = वह मीरा के लिये हितकारी होगया । सा अपि = वह मीरा भी । अभया = भय रहित। दीनावनश्रीपतेः दृ दीनों के रक्षक श्रीकृष्ण । गुणगणान् जगौ = गुणगणों का गान करने लगी।

अनुवाद – मीरा का वह देवर भोजराज (मीरा के पति) की मृत्यु के बाद राजपद पाकर मीरा को मारने के लिये उद्यत हुआ । वह पहले कभी न सुनी हुयी कपट और पाप की कूट रचनायें करने लगा । उसने प्रतिकूलबुद्धि से जो भी किया, वह सब मीरा के लिये हितकारी होगया । मीरा भी भयरहित होकर दीनरक्षक श्रीकृष्ण का गुणगान करने लगी ।

देवर के द्वारा मीरा के वध का उपक्रम –

यन्मेऽदीयत देवरेण गरलं प्रच्छाद्य सद्भाजने
पीतं स्नातविपूतया तदहहा पीयूषमेवाजनि।
या तेनैव करालसर्पभरिता प्राहायि मञ्जूषिका
ध्यानान्ते विवृता तु दर्शयति सा सौवर्णमूर्तिं विभोः।।25।।

अन्वय दृ मे देवरेण यद् गरलं सद्भाजने प्रच्छाद्य अदीयत् । अहहा स्नातविपूतया पीतं तत् पीयूषम् एव अजनि । तेन एव या करालसर्पभरिता मञ्जूषिका प्राहायि , ध्यानान्ते विवृता तु सा विभोः सौवर्णमूर्त्तितं दर्शयति ।

शब्दार्थ – मे देवरेण = मेरे देवर के द्वारा । यद् गरलं सद्भाजने प्रच्छाद्य अदीयत् । अहहा स्नातविपूतया पीतं तत् पीयूषम् एव अजनि । तेन एव या करालसर्पभरिता मञ्जूषिका प्राहायि , ध्यानान्ते विवृता तु सा विभोः सौवर्णमूर्त्तितं दर्शयति ।

अनुवाद दृ मेरे देवर ने सुन्दर पात्र में जो विष मुझे दिया, उसे मैने स्नान आदि से पव्त्र होकर पिया। आश्चर्य है कि वह विष अमृत ही बन गया । उसने भयंकर सर्प से भरी हुयी जो सन्दूक मेरे पास भेजी , ध्यान करने के बाद देखने पर उसमें श्रीकृष्ण की मूर्त्तित ही दिखी ।

अन्तःशङ्कुमयी बहिः सुरुचिरा शय्यामुना प्रेषिता
रात्रौ यावदहं शयेऽत्र मृदुला सा पुष्पतल्पायिता।
श्रीकृष्णैकमनाः सुरक्षिततनुस्तन्नाम गायन्त्यहं
पश्यामि प्रभुमेव संततमहो तद्दिव्यभूतीस्तथा।।26।।

अन्वय दृ अमुना अन्तःशङ्कुमयी बहिः सुरुचिरा शय्या प्रेषिता । रात्रौ यदा अहम् अत्र शये सा मृदुला पुष्पतल्पायिता । अहो ! श्री कृष्णैकमनाः सुरक्षिततनुः तन्नाम गायन्ती अहं सन्ततं प्रभुं तथा तद्दिव्यभूतीः पश्यामि ।

शब्दार्थ – अमुना = मेरे देवर के द्वारा ।अन्तःशङ्कुमयी = अन्दर काँटों से युक्त । बहिः सुरुचिरा = बाहर से सुन्दर दिखने वाली । शय्या प्रेषिता = शय्या भेजी गयी ।

रात्रौ यदा अहम् अत्र शये = रात में जब मैं उस शय्या में सोती थी । सा मृदुला पुष्पतल्पायिता = वह कोमल पुष्पों की शय्या बन जाती थी । अहो ! श्री कृष्णैकमनाः = श्रीकृष्ण मात्र में मन लगाने वाली । सुरक्षिततनुः = पूर्वोक्त विपत्तियों से रक्षित शरीर वाली । तन्नाम गायन्ती =श्रीकृष्ण के नाम का गायन करती हुयी । अहं सन्ततं प्रभुं तथा तद्दिव्यभूतीः पश्यामि = मैं सदैव प्रभु तथा उसकी दिव्य भूतियों का दर्शन करती थी ।

अनुवाद दृ मेरे देवर ने मेरे लिये ऐसी शय्या भेजी , जिसमें अन्दर काँटे लगे थे तथा बाहर से वह सुन्दर दिखती थी । मैं रात में जब उसमें सोयी तो वह वह कोमल पुष्पों की शय्या बन जाती थी । श्रीकृष्ण मात्र में मन लगाने वाली । पूर्वोक्त विपत्तियों से रक्षित शरीर वाली मैं श्रीकृष्ण के नाम का गायन करती हुयी सदैव प्रभु तथा उसकी दिव्य भूतियों का दर्शन करती थी ।

13.2.2 मीरा के पत्र का तुलसीदास द्वारा प्रेशित उत्तर

मीरा का तुलसीदास को पत्र लिखना –

इत्थं विप्रकृताप्यशेषसहना सा यावदस्थान्मुदा
तावद्देवरराक्षसो व्यरचयत्पूजाविधेर्विप्लवम्।
कर्तव्यप्रतिपत्तिमूढहृदया प्राज्ञोपदेशेप्सिनी
पत्रं साऽथ विलिख्य पूज्यतुलसीदासाय तत्प्राहिणोत्।।27।।

अन्वय दृ इत्थं विप्रकृता अपि अशेषसहना सा यावद् मुदा अस्थात् तावत् देवर राक्षसः पूजाविधेः विप्लवं व्यरचयत्। अथ कर्तव्यप्रतिपत्तिमूढहृदया प्राज्ञोपदेशेप्सिनी सा पत्रं विलिख्य तत् पूज्यतुलसीदासाय प्राहिणोत्।

शब्दार्थ – इत्थं = इस प्रकार । विप्रकृता अपि = पीड़ित की गयी वह । अशेषसहना = सभी विपत्तियों को सहने वाली । सा यावद् मुदा अस्थात् = जैसी ही प्रसन्न होकर बैठती थी । तावत् देवर राक्षसः = वैसी वह देवर राक्षस । पूजाविधेः विप्लवं व्यरचयत् = पूजा के विधान में विरोध रच देता था । अथ कर्तव्यप्रतिपत्तिमूढहृदया = तदनन्तर किंकर्तव्य विमूढ हृदय वाली । प्राज्ञोपदेशेप्सिनी = किसी तत्त्वज्ञ का उपदेश चाहने वाली। सा पत्रं विलिख्य = वह मीरा पत्र लिखकर। तत् पूज्यतुलसीदासाय प्राहिणोत् = उसे पूज्य तुलसीदास के पास भेजा।

अनुवाद दृ इस प्रकार मीरा अपने देवर के द्वारा पीड़ित की जा रही थी किन्तु वह उन समस्त विपत्तियों को सहन कर रही थी । वह जब प्रसन्न होकर बैठती तब वह देवर राक्षस उसकी पूजा विधि में विघ्न उत्पन्न कर देता था । तदनन्तर किंकर्तव्यविमूढ मन वाली मीरा ने इस विषय में किसी विद्वान् सन्त का उपदेश पाने की इच्छा से पत्र लिख कर उसे तुलसीदास के पास भेजा ।

आजन्मप्रभृति प्रियः सहचरः श्रीकृष्ण एकः कृत–

स्तस्य प्रेमसुपाशपाशितहृदा गायाभ्यजस्रं गुणान्।
बन्धुश्येनविलूनपक्षविहगी सैषाऽद्य नष्टोद्गतिः
कृत्यं मे मुनिवर्य बोधय सतां वाचि श्रियो हि स्थिताः।।28।।

अन्वय दृ आजन्मप्रभृति एकः श्रीकृष्णः प्रियः सहचरः कृतः। प्रेमसुपाशपाशितहृदा अजस्रं

तस्य गुणान् गायामि । सा एषा बन्धुश्येनविलूनपक्षविहगी अद्य नष्टोद्गतिः (जाता)। हे मुनिवर्य ! मे कृत्यं बोधय । हि सतां वाचि श्रियः स्थिताः (भवन्ति) ।

शब्दार्थ दृ आजन्मप्रभृति = जन्म से । एकः श्रीकृष्णः प्रियः सहचरः कृतः = एकमात्र श्रीकृष्ण प्रिय सहचर बनाया गया । प्रेमसुपाशपाशितहृदा = प्रेम के पाश से बँधे हृदय वाली । अजस्रं तस्य गुणान् गायामि = सदैव श्रीकृष्ण का ही गुणगान करती हूँ । सा एषा = वह मैं । बन्धुश्येनविलूनपक्षविहगी = देवर रूपी बाज के द्वारा नष्ट किये गये पंखों वाली ।अद्य नष्टोद्गतिः = जिसका उड़ना नष्ट होगया है। हे मुनिवर्य != हे मुनिवर तुलसीदास जी । मे कृत्यं बोधय = मुझे क्या करना चाहिये, यह बताइये । हि सतां वाचि= निश्चय ही सत्पुरुषों की वाणी में । श्रियः स्थिताः = कल्याणप्रद सम्पत्तियाँ छिपी रहती हैं ।

अनुवाद दृ हे मुनिवर तुलसीदास । मैंने जन्म से ही कृष्ण को अपना सहचर बनाया है ।उसके प्रेमपाश से मेरा हृदय बँधा है । मैं सदैव उसी का गुणगान करती हूँ । देवर रूपी बाज ने मेरे पंखों को नष्ट कर दिया है, जिसके कारण मैं उड़ नहीं सकती । हे मुनिवर ! आप बतायें कि मुझे क्या करना चाहिये । निश्चय ही सत्पुरुषों की वाणी में कल्याणप्रद सम्पत्तियाँ छिपी रहती हैं ।

मीरा के पत्र का तुलसी दास द्वारा प्रेषित उत्तर –

ज्ञात्वा तद्गतिमादिदेश मतिमान् हेयास्त्वया नास्तिकाः

प्रह्लादः पितरं बलिः कुलगुरुं गोप्यः पतीनात्मनः।

कैकयीं भरतो दशाननमपि ज्येष्ठाग्रजं सोदरो

व्याचिक्षेप निराचकार मुमुचुस्तत्याज दूराञ्जहौ।।29।।

अन्वय दृ तद्गतिं ज्ञात्वा मतिमान् दृ त्वया नास्तिकाः हेयाः दृ इति आदिदेश । प्रह्लादः पितरं व्याचिक्षेप । बलिः कुलगुरुं निराचकार । गोप्यः आत्मनः पतीन् मुमुचुः । भरतः कैकेयीं तत्याज । दशाननमपि ज्येष्ठाग्रजं सोदरः दूराञ्जहौ ।

शब्दार्थ – तद्गतिं ज्ञात्वा = मीरा की अवस्था को जान कर । मतिमान् = तुलसी दास ने । त्वया नास्तिकाः हेयाः = तुम्हें आस्तिकों को छोड़ देना चाहिये । इति आदिदेश =यह उपदेश दिया । । प्रह्लादः पितरं व्याचिक्षेप = प्रह्लाद ने पिता को छोड़ा । बलिः कुलगुरुं निराचकार = बलि ने कुलगुरु बालि को छोड़ा। गोप्यः आत्मनः पतीन् मुमुचुः= गोपियों ने अपने पतियों को छोड़ा। भरतः कैकेयीं तत्याजः= भरत ने कैकेयी का परित्याग किया। दशाननमपि ज्येष्ठाग्रजं सोदरः दूराञ्जहौ = विभीषण ने दशमुख बड़े भाई को दूर छोड़ दिया ।

अनुवाद – मीरा की दशा जान कर तुलसीदास ने कहा दृ तुझ आस्तिक को इन नास्तिक देवर आदि को छोड़ देना चाहिये । प्रह्लाद ने भगवद्विरोधी अपने पिता को छोड़ा। बलि ने कुलगुरु शुक्राचार्य को त्याग दिया । गोपियों ने अपने नास्तिक पतियों को त्याग दिया। भरत ने कैकेयी माता का परित्याग किया । विभीषण ने अपने बड़े भाई दशमुख रावण को त्याग दिया।

एषामाचरितं निदर्शनतया गृह्णीष्व लोकोत्तरं

बान्धव्यं परमस्तु ते भगवता किं बन्धुपाशैः परैः।

किं तेनाञ्जनलेपनेन यदि तत्पर्यन्धयेल्लोचनं

किं भूयः कथितेन वा कुरु मतिं या देशकालोचिता।।30।।

अन्वय दृ एषां लोकोत्तरम् आचरितं निदर्शनतया गृह्णीष्व । ते परं बान्धव्यं भगवता (विद्यते) । परैः बन्धुपाशैः किम् ? यदि तत् लोचनं पर्यन्धयेत् (तर्हि) तेन अञ्जनलेपनेन किम् ? या देशकालोचिता (तां) मतिं कुरु । भूयः कथितेन वा किम् ?

शब्दार्थ दृ एषां = पूर्व में कहे गये भक्तों के । लोकोत्तरम् आचरितं = लोकोत्तर आचरण को। निदर्शनतया गृह्णीष्व= उदाहरण के रूप में ग्रहण करो । ते परं बान्धव्यं भगवता =तुम्हारा परं बन्धुत्व भगवान् से है। परैः बन्धुपाशैः किम् ?= दूसरे बन्धु पाशों से क्या प्रयोजन ? यदि तत् लोचनं पर्यन्धयेत् =यदि आँखों को अन्धा कर दे तो । तेन अञ्जनलेपनेन किम् ? = उस अंजन को लगाने से क्या । या देशकालोचिता मतिं कुरु = जो देशकाल के अनुसार उचित हो वैसा निर्णय लो। भूयः कथितेन वा किम् = अधिक कहने से क्या लाभ ?

अनुवाद – पूर्व में कहे गये प्रह्लाद आदि भक्तों के लोकोत्तर आचरण को उदाहरण के रूप में ग्रहण करो। तुम्हारा परं बन्धुत्व भगवान् से है। दूसरे बन्धु पाशों से क्या प्रयोजन ? जो अंजन आँखों को अन्धा कर दे उस अंजन को लगाने से क्या । जो देशकाल के अनुसार उचित हो वैसा निर्णय लो। अधिक कहने से क्या लाभ ?

13.2.3 गृह त्याग तथा मार्गजन्य कश्ट

तुलसीदास का पत्र पाकर मीरा का गृहत्याग –

प्राप्यादेशमिमं सुपूज्यतुलसीदासादकार्षीन्मतिं
हित्वा बन्धुजनान्निवर्तितुमितो वृन्दावनीमन्दिरम्।
यत्रापे स्मृतिरद्भुता किल पुराजन्मान्तरव्यापृतेः
यत्रैवेशमुपासितुं च सुकरं सर्वात्मना श्रीपतिम्।।31।।

अनुवाद – सुपूज्यतुलसीदासात् इमम् आदेशं प्राप्य बन्धुजनान् हित्वा इतः वृन्दावनीमन्दिरं निवर्तितुं मतिम् अकार्षीत् ।यत्र पुराजन्मान्तरव्यापृतेः अद्भुता स्मृतिः आपे किल । यत्रैव सर्वात्मना श्रीपतिम् ईशम् उपासितुं सुकरम् ।

शब्दार्थ दृ सुपूज्यतुलसीदासात् = पूज्य तुलसीदास से इस पूर्वोक्त। इमम् आदेशं प्राप्य = आदेश को पाकर । बन्धुजनान् हित्वा = बन्धुजनों को छोड़ कर । इतः वृन्दावनीमन्दिरं = पति के घर से वृन्दावन मन्दिर के लिये । निवर्तितुं मतिम् अकार्षीत् =लौटने का निर्णय किया ।यत्र पुराजन्मान्तरव्यापृतेः = जहाँ पूर्वजन्म के वृत्तान्त की । अद्भुता स्मृतिः आपे किल = अद्भुत स्मृति प्राप्त की थी । यत्रैव सर्वात्मना = जहाँ सर्वतो भाव से । श्रीपतिम् ईशम् उपासितुं सुकरम् = लक्ष्मीपति श्रीकृष्ण की उपासना सुकर थी ।

अनुवाद दृ पूज्य तुलसीदास से पूर्वोक्त पत्र रूप आदेश पाकर , बन्धुजनों को छोड़कर मीरा ने पति के घर से वृन्दावन दृ मन्दिर की ओर जाने का मन बनाया । जहाँ उसने पूर्वजन्म के कर्मों की अद्भुत स्मृति प्राप्त की थी तथा जहाँ सर्वात्मना श्रीकृष्ण की उपासना सुकर थी ।

मीरा के मार्गजन्य कष्ट –

क्वेन्द्रश्रीः क्व पथि श्रमः क्व च सुखं हर्म्ये क्व वाऽऽर्तिर्वने

मृष्टान्नं क्व सुवर्णपात्रकलितं भैक्ष्यं क्व कन्थार्पितम्।
क्व प्रासादगहंसतूलशयनं शय्याश्मसु क्वाध्वनो
नूनं निश्चितचेतसां तृणसमः कष्टाचलानां गणः।।32।।

अनुवाद – इन्द्रश्रीः क्व पथि श्रमः च क्व? हर्म्ये सुखं क्व ? आर्तिर्वने वा (क्व ?) । सुवर्णपात्रकलितं मृष्टान्नं क्व कन्थार्पितं भिक्ष्यं क्व ? प्रासादगहंसतूलशयनं क्व ? अध्वनः शय्याश्मसु (शयनं) क्व ? नूनं निश्चितचेतसां कष्टाचलानां गणः तृणसमः भवति ।

शब्दार्थ – इन्द्रश्रीः = राजमहल का राजवैभव । क्व = कहाँ । पथि श्रमः च क्व = मार्ग का श्रम कहाँ । हर्म्ये सुखं क्व == महल का सुख कहाँ । आर्तिर्वने वा कहाँ जंगल के कष्ट । सुवर्णपात्रकलितं मृष्टान्नं क्व = कहाँ सुवर्ण के पात्रों में प्राप्त होने वाला भोजन ।कन्थार्पितं भैक्ष्यं क्व = कहाँ कर्पटकोश में दूसरों के द्वारा दिया गया भोजन। प्रासादगहंसतूलशयनं क्व = कहाँ राजमहल में हंसतूल से निर्मित शय्या ।अध्वनः शय्याश्मसु क्व = कहाँ मार्ग में पत्थरों की शय्या पर शयन। नूनं निश्चितचेतसां = निश्चय ही जिनका मन किसी लक्ष्य के लिये निश्चित कर लेता है। कष्टाचलानां गणः = कष्टों का समूह । तृणसमः भवति = तिनके के समान होता है।

अनुवाद – कहाँ पूर्व में अनुभूत इन्द्र का सा वैभव और कहाँ मार्ग का श्रम ? कहाँ राजभवन का सुख और कहाँ वन के कष्ट ? कहाँ सुवर्ण के पात्रों में परोसा गया सुप्रणीत आहार और कहाँ दूसरे के द्वार कर्पटकोट में दिया गया भिक्षान्न ?कहाँ प्रासाद में मिलने वाला हंसतूल से निर्मित शय्या और कहाँ मार्ग की पषाणमयी शय्या? निश्चय ही दृढ़चित्तवालों के लिये कष्ट के पर्वतों का समूह भी तिनके के समान लगता है ।

13.2.4 मीरा का पुनः वृंदावन पहुंचना

मीरा का पुनः वृन्दावन पहुचना –

श्रीवृन्दावनमापतत्पुनरसौ दीर्घप्रवासोत्तरं
दुर्भिक्षोत्तरमागतेव सुचिरात्प्रावृड्विभूतिः शुभा।
आमोदं भुवि तन्वती प्रविततं सन्तापमुच्छिन्दती
पुण्यज्योतिरुदीर्य लोकतमसो विच्छेदमातन्वती।।33।।

अन्वय – दुर्भिक्षोत्तरं सुचिरात् शुभा प्रावृड्विभूतिः इव भुवि आमोदं तन्वती प्रविततं सन्तापम् उच्छिन्दती पुण्यज्योतिः उदीर्य लोकतमसः विच्छेदम् आतन्वती असौ दीर्घप्रवासोत्तरं पुनः श्रीवृन्दावनम् आपत् ।

शब्दार्थ – दुर्भिक्षोत्तरं = दुर्भिक्ष , अकाल के बाद ।सुचिरात् बहुत दिनों के बाद । शुभा = प्रावृड्विभूतिः= वर्षाकाल की । इव = तरह ।भुवि = पृथ्वी पर । आमोदं तन्वती = मीरा के पक्ष में परिचित लोगों में आनन्द प्रदान करती हुयी । वर्षा के पक्ष में दुर्भिक्ष से उपहत प्रदेशों में सौरभ प्रसारित करती हुयी । प्रविततं सन्तापम् = मीरा के पक्ष में चिरकालिक वियोगजन्य सन्ताप को। वर्षा के पक्ष में धूप के ताप को । उच्छिन्दती = दूर करती हुयी । पुण्यज्योतिः उदीर्य = मीरा के पक्ष में पवित्र ज्ञान को उपदेश के माध्यम से प्रसारित कर । लोकतमसः विच्छेदम् = जनता के मन के अज्ञान को विच्छिन्न ।आतन्वती = करती हुयी । असौ = मीरा । दीर्घप्रवासोत्तरं = लम्बे प्रवास के अनन्तर । पुनः श्रीवृन्दावनम् आपत् = फिर से वृन्दावन पहुँची ।

अनुवाद – दुर्भिक्ष , अकाल के बाद , बहुत दिनों के बाद वर्षाकाल की सुन्दर समृद्धि की तरह पृथ्वी पर (मीरा के पक्ष में) परिचित लोगों में आनन्द प्रदान करती हुयी , (वर्षा के पक्ष में दुर्भिक्ष से उपहत प्रदेशों में सौरभ प्रसारित करती हुयी) (मीरा के पक्ष में) चिरकालिक वियोगजन्य सन्ताप को (वर्षा के पक्ष में धूप के ताप को) दूर करती हुयी , (मीरा के पक्ष में) पवित्र ज्ञान को उपदेश के माध्यम से प्रसारित कर जनता के मन के अज्ञान को विच्छिन्न करती हुयी मीरा लम्बे प्रवास के अनन्तर फिर से वृन्दावन पहुँची ।

अलङ्कार – यहाँ कतिपय विशेषणों के मीरा और वर्षा के पक्ष में श्लिष्ट होने के कारण श्लेष अलंकार है ।

पावित्र्याम्बुसुवर्षणेन शुचितामापादयन्ती दिशः
कर्षन्ती गुणसौरभेण जनतारोलम्बवृन्दानि सा।
श्रीमान् वा कृपणः सुधीरुत जडो योषाथवा पूरुषो
दुर्लङ्घ्यान्यपि निस्तरन्ति तपसेत्यादर्शयत्कर्मभिः।।34।।

अन्वय – सा पावित्र्याम्बुसुवर्षणेन दिशः शुचिताम् आपादयन्ती गुणसौरभेण जनतारोलम्बवृन्दानि कर्षन्ती श्रीमान् वा कृपणः सुधीः उत जडः योषा अथवा पूरुषः दुर्लङ्घ्यानि अपि तपसा निस्तरन्ति इति (मीरा) कर्मभिः अदर्शयत् ।

शब्दार्थ दृ सा = वह मीरा। पावित्र्याम्बुसुवर्षणेन = पवित्रतारूपी जल की वृष्टि करती हुयी । दिशः शुचिताम् = दिशाओं को पवित्र। आपादयन्ती= करती हुयी । गुणसौरभेण = गुणों के सौरभों से। जनतारोलम्बवृन्दानि = जनता रूपी भ्रमरों के समूह को। कर्षन्ती = आकर्षित करती हुयी ।श्रीमान् वा कृपणः = धनी अथवा दरिद्र । सुधीः उत जडः = विद्वान् अथवा मूर्ख । योषा अथवा पूरुषः = स्त्री अथवा । दुर्लङ्घ्यानि अपि = अलंघ्य भी दुर्गों। तपसा निस्तरन्ति = तपस्या से पार करते हैं। इति कर्मभिः अदर्शयत् = यह मीरा अपने कर्म से दिखाती थी।

अनुवाद – वह मीरा पवित्रतारूपी जल की वृष्टि करती हुयी दिशाओं को पवित्र करती हुयी गुणों के सौरभों से जनता रूपी भ्रमरों के समूह को आकर्षित करती हुयी , धनी अथवा दरिद्र , विद्वान् अथवा मूर्ख , स्त्री अथवा पुरुष अलंघ्य भी दुर्गों को तपस्या से पार करते हैं , यह मीरा अपने कर्म से दिखाती थी ।

मीरा की चर्या –

तस्या लोकविलक्षणं समभवत्पूतात्मनस्तत्तपः
कायक्लेशविरूपणानि यदसौ व्यर्थानि नाशिश्रिये।
नान्तःकण्टकमध्यशेत शयनं सेहे वृथा न क्षुधा–
तृण्निद्रा न च वल्कलं धृतवती चक्रे न मौनव्रतम।।35।।

अन्वय – पूतात्मनः तस्याः तत्तपः लोकविलक्षणं समभवत् । यद् असौ कायक्लेशविरूपणानि व्यर्थानि न आशिश्रिये । अन्तःकण्टकं शयनम् अध्यशेत क्षुधातृण्निद्राः वृथा न सेहे । वल्कलं न धृतवती । मौनव्रतं न चक्रे ।

शब्दार्थ – पूतात्मनः तस्याः = पवित्र आत्मा वाली उस मीरा का । तत्तपः= वह तप । लोकविलक्षणं समभवत् = सामान्य तपस्वियों के आचरण विलक्षण था । यद् असौ

क्योंकि यह ।कायक्लेशविरूपणानि = शरीर को पीड़ा देने वाले तप्त मुद्राधारण आदि को। व्यर्थानि न आशिश्रिये व्यर्थ में धारण नहीं किया । अन्तःकण्टकं शयनम् अध्यशेत = तीक्ष्ण काँटों से परिपूर्ण शयन में नहीं सोयी । क्षुधातृष्निद्राः वृथा न सेहे = व्यर्थ में भूख, प्यास और निद्रा व्यर्थ में नही सहे। वल्कलं न धृतवती = वल्कल नहीं धारण की। मौनव्रतं न चक्रे = मौनव्रत नहीं किया।

शब्दार्थ – पवित्र आत्मा वाली उस मीरा का वह तप सामान्य तपस्वियों के आचरण विलक्षण था क्योंकि उसने शरीर को पीड़ा देने वाले तप्त मुद्राधारण आदि को व्यर्थ में धारण नहीं किया । तीक्ष्ण काँटों से परिपूर्ण शयन में नहीं सोयी । भूख, प्यास और निद्रा व्यर्थ में नही सहे । वल्कल नहीं धारण की । मौनव्रत नहीं किया ।

ध्यायन्ती मनसा जपैः प्रणुतिभिः कृष्णप्रसादेप्सिनी
लेभे सा क्षणमेकदैव सहसा देवस्य संदर्शनम्।
दिव्यं तच्च पुनर्विलुप्तमभवत्साप्यश्रुधाराजलैः
शुष्कापाण्डु ममार्ज वक्त्रनलिनं चेतोवसादं गता।।36।।

अन्वय – कृष्णप्रसादेप्सिनी प्रणुतिभिः जपैः मनसा ध्यायन्ती सा क्षणम् एकदैव देवस्य सन्दर्शनं लेभे । दिव्यं तच्च पुनः विलुप्तम् अभवत् । सा च चेतोवसादं गता शुष्कापाण्डु वक्त्रनलिनम् अश्रुधाराजलैः ममार्ज ।

शब्दार्थ – कृष्णप्रसादेप्सिनी दृ श्रीकृष्ण का प्रसाद चाहने वाली वह मीरा । प्रणुतिभिः जपैः= नमस्कारों, जपों से । मनसा ध्यायन्ती = मन से कृष्ण का अनुध्यान करती हुयी । सा क्षणम् एकदैव देवस्य = वह क्षण भर के लिये एकबार ही श्रीकृष्ण के । सन्दर्शनं लेभे = दर्शन करती थी । दिव्यं तच्च = वह दिव्य दर्शन ।पुनः विलुप्तम् अभवत् = पुनः विलुप्त हो गया । सा च चेतोवसादं = वह मानसिक अवसाद को प्राप्त होकर । शुष्कापाण्डु वक्त्रनलिनम् = अपने सूखे हुये मुख कमल को । अश्रुधाराजलैः ममार्ज = आँसुओं की जलधारासे पुनः धोयी ।

आनुवाद – श्रीकृष्ण का प्रसाद चाहने वाली वह मीरा नमस्कारों, जपों से , मन से कृष्ण का अनुध्यान करती हुयी क्षण भर के लिये एकबार ही श्रीकृष्ण के दर्शन करती थी। वह दिव्य दर्शन पुनः विलुप्त हो गया । वह मानसिक अवसाद को प्राप्त होकर अपने सूखे हुये मुख कमल को आँसुओं की जलधारासे पुनः धोयी ।

तद्वक्त्राम्बुजमश्रुवारिहिमयुग् भेजे विकासं पुनः
प्रत्याशादिवसेश्वरे समुदिते पूर्वस्मृतिक्ष्माभृति।
प्रध्यानाम्बुनिधौ विगाह्य गहने संभूय सा प्रेयसा
ब्रह्मानंदमहातरंगनिचये दोलासुखान्यन्वभूत्।।37।।

आन्वय – पूर्वस्मृतिक्ष्माभृति प्रत्याशादिवसेश्वरे समुदिते अश्रुवारिहिमयुक् तद्वक्त्राम्बुजं पुनः विकासं भेजे। ब्रह्मानन्दमहातरङ्गनिचये गहने प्रध्यानाम्बुनिधौ विगाह्य सा प्रेयसा सम्भूय दोलासुखम् अन्वभूत्।

शब्दार्थ दृ पूर्वस्मृतिक्ष्माभृति = पूर्व जन्म के स्मरणरूप पर्वत में । प्रत्याशादिवसेश्वरे = प्रत्याशा रूप सूर्य के । समुदिते = उदित हो जाने पर । अश्रुवारिहिमयुक् = आँसू रूप ओस से। तद्वक्त्राम्बुजं = उसका मुखरूप्ख कमल । पुनः विकासं भेजे = पुनः विकसित

हो गया । ब्रह्मानन्दमहातरङ्गनिचये = ब्रह्मानन्द रूप महातरंगों के समूह से युक्त ।गहने प्रध्यानाम्बुनिधौ = गहन ध्यान रूप समुद्र में । विगाह्य = डूबकर । सा प्रेयसा सम्भूय = प्रियतम कृष्ण के साथ होकर उस मीरा ने । दोलासुखम् अन्वभूत् = दोलासुख का अनुभव किया ।

अनुवाद – पूर्व जन्म के स्मरणरूप पर्वत में प्रत्याशा रूप सूर्य के उदित हो जाने पर आँसू रूप ओस से उसका मुखरूप्ष्ठ कमल पुनः विकसित हो गया । ब्रह्मानन्द रूप महातरंगों के समूह से युक्त गहन ध्यान रूप समुद्र में डूबकर प्रियतम कृष्ण के साथ होकर उस मीरा ने दोलासुख का अनुभव किया ।

गायन्ती महिमानमद्भुततरं प्रेम्णः कृपाब्धेर्विभो–
श्चक्रे संसृतिचित्रभूमिफलके चित्रप्रबन्धार्पणम्।
चित्राणि व्यलिखत् स्वजीवनपटेष्वादर्शभूतानि सा
गाथामाल्यचयं जुगुम्फ सुरभिं रोमाञ्चितोदञ्चकम्।।38।।

अन्वय – (सा) कृपाब्धेः विभोः प्रेम्णः अद्भुततरं महिमानं गायन्ती संसृतिचित्रभूमिफलके चित्रप्रबन्धार्पणं चक्रे। सा स्वजीवनपटेष्वादर्शभूतानि चित्राणि व्यलिखत्। रोमाञ्चितोदञ्चकं सुरभिं गाथामाल्यचयं जुगुम्फ ।

शब्दार्थ – कृपाब्धेः विभोः प्रेम्णः = कृपासागर विभु भगवान् कृष्ण के प्रेम की। अद्भुततरं महिमानं = अद्भुत महिमाओं का । गायन्ती = गान करती हुयी । संसृतिचित्रभूमिफलके = कर्मलोक रूप संसार के फलक में । चित्रप्रबन्धार्पणं = सुन्दर प्रबन्धों का अर्पण ।चक्रे = करती रही । सा स्वजीवनपटेष्वादर्शभूतानि = मीरा ने अपने जीवनरूप वस्त्रों में आदर्शभूत । चित्राणि व्यलिखत् = विविध उपदेश वचनों का लेखन करती रही । सुरभिं रोमाञ्चितोदञ्चकं जुगुम्फ = श्रुति मधुर , गायनमात्र से श्रोताओं को प्रभावित करने वाली । गाथामाल्यचयं = स्तुतिरूप गीतों का गुम्फन करती रही ।

आनुवाद – कृपासागर विभु भगवान् कृष्ण के प्रेम की अद्भुत महिमाओं का गान करती हुयी कर्मलोक रूप संसार के फलक में सुन्दर प्रबन्धों का अर्पण करती रही। मीरा ने अपने जीवनरूप वस्त्रों में आदर्शभूत विविध उपदेश वचनों का लेखन किया। उसने श्रुति मधुर , गायनमात्र से श्रोताओं को प्रभावित करने वाली स्तुतिरूप गीतों का गुम्फन किया।

दिव्यप्रेमलतामनेकविधिभिः संपोष्टुकामा सती
शश्वत्तां प्रणिधानयोगपयसाऽसिञ्चत्प्रयत्नेन सा।
व्याचिक्षेप विकल्पकत्तृणचयं तन्मूलसारक्षयं
संवृद्धिं च निनाय मानसवनीरक्षाकरीं वल्लरीम्।।39।।

अन्वय दृ दिव्यप्रेमलताम् अनेकविधिभिः सम्पोष्टुकामा सा शश्वत् प्रणिधानयोगपयसा असिञ्चत् ।तन्मूलसारक्षयं विकल्पकत्तृणचयं व्याचिक्षेप । मानसवनीरक्षाकरीं वल्लरीं संवृद्धिं च निनाय।

शब्दार्थ – दिव्यप्रेमलताम् = दिव्य प्रेमलता को ।अनेकविधिभिः = पूजा, स्तुति, कीर्तन, ध्यान आदि अनेक विधियों से। सम्पोष्टुकामा = पुष्ट करने की कामना से । सा शश्वत् = वह मीरा उसे सदैव। प्रणिधानयोगपयसा = परमात्मा में सब कुछ समर्पण

कर के फलसंन्यास रूप जल से ।असिञ्चत् = सीचना । तन्मूलसारक्षयं = श्रद्धा रूप भक्तिलता की मूल के सार को नष्ट करने वाले । विकल्पकत्तृणचयं = संशयात्मक भेद बुद्धिरूप कुत्सित तृणों के समूह को । व्याचिक्षेप = उखाड़ फेका। मानसवनीरक्षाकरीं = चित्तरूपी उद्यान की रक्षा करने वाली ।वल्लरीं = वल्लरी ।संवृद्धिं च निनाय = वृद्धि को प्राप्त कराया।

अनुवाद – दिव्य प्रेमलता को पूजा, स्तुति, कीर्तन, ध्यान आदि अनेक विधियों से पुष्ट करने की कामना से वह मीरा उसे सदैव परमात्मा में सब कुछ समर्पण कर के फलसंन्यास रूप जल से सीची । श्रद्धा रूप भक्तिलता की मूल के सार को नष्ट करने वाले संशयात्मक भेद बुद्धिरूप कुत्सित तृणों के समूह को उखाड़ फेका । चित्तरूपी उद्यान की रक्षा करने वाली वल्लरी को वृद्धि को प्राप्त कराया।

13.2.5 मीरा के उपदेश और भक्ति का फल

भक्तों के लिये मीरा के उपदेश –

कस्य प्रेम समर्ज्यतां भगवतो न स्त्रीनृपादेः पुनः
सम्पाद्यं मनुजेन तत्कथमहो भक्त्या न चाटूक्तिभिः।
सा लभ्या कथमीश्वरैकमननान्नार्थादिसंचिन्तना–
दित्येषा परतत्त्वदर्शनविधिं भक्तालिमग्राहयत्।।40।।

अन्वय – कस्य प्रेम समर्ज्यताम् ? भगवतो , न पुनः स्त्रीनृपादेः । मनुजेन तत्कथं सम्पाद्यम् ? भक्त्या, न चातूक्टिभिः। सा कथं लभ्या ? ईश्वरैकमननात्, न अर्थादिसञ्चिन्तनात् । इत्येषा परतत्त्वदर्शनविधिं भक्तालिं अदर्शयत्।

शब्दार्थ – कस्य प्रेम समर्ज्यताम् ? = किसका प्रेम अर्जित करना चाहिये ? भगवतः = भगवान् का। न पुनः स्त्रीनृपादेः = न कि स्त्री या राजा आदि का। मनुजेन तत्कथं सम्पाद्यम् ? = मनुश्य को वह भगवत्प्रेम कैसे प्राप्त करना चाहिये? भक्त्या = भक्ति से। न चाटूक्तिभिः = चाटूक्तियों से नहीं । सा कथं लभ्या ?= भक्ति कैसे प्राप्त करनी चाहिये ? ईश्वरैकमननात् = एकमात्र ईश्वर के मनन से। न अर्थादिसञ्चिन्तनात् = अर्थ आदि पुरुषार्थों के चिन्तन से नहीं। इत्येषा = इस प्रकार से इस । परतत्त्वदर्शनविधिं = परतत्त्व दर्शन की विधि को। भक्तालिं अदर्शयत् = भक्तों के समूह को दिखाया ।

अनुवाद – किसका प्रेम अर्जित करना चाहिये ? भगवान् का । न कि स्त्री या राजा आदि का। मनुष्य को वह भगवत्प्रेम कैसे प्राप्त करना चाहिये ? भक्ति से । चाटूक्तियों से नहीं । भक्ति कैसे प्राप्त करनी चाहिये ? एकमात्र ईश्वर के मनन से । अर्थ आदि पुरुषार्थों के चिन्तन से नहीं। इस प्रकार से इस परतत्त्व दर्शन की विधि को मीरा भक्तों के समूह को दिखाया ।

भक्ति का फल –

दृष्टश्चेन्महिमा विभोरणुरिदं विश्वं विभात्यात्मन–
स्तन्नेत्रस्य सुचारुता यदि मदो हा पुण्डरीक क्व ते।
तत्तेजो यदि का सहस्रकर ते तेजस्विताया: कथा
नित्यानन्दमयाननं यदि विधो किं शब्दसाम्येन ते।।41।।

अन्वय – विभोः महिमा दृष्टः चेत् आत्मनः इदं विश्वं अणुः विभाति । यदि तन्नेत्रस्य सुचारुता (दृष्टः) , हा पुण्डरीक ते मदः क्व ? यदि तत्तेजः दृष्टः (तर्हि) हे सहस्रकर ! ते तेजस्वितायाः का कथा । (यदि तस्य) नित्यानन्दमयाननं (दृष्टं तर्हि) हे विधो! ते शब्द साम्येन किम् ?

शब्दार्थ – विभोः महिमा दृष्टः चेत् = यदि श्रीकृष्ण की महिमा का दर्शन कर लिया गया। आत्मनः इदं विश्वं अणुः विभाति = तो भक्त को यह विश्व अति सूक्ष्म दिखाई देता है।यदि तन्नेत्रस्य सुचारुता (दृष्टः) = अगर उसके नेत्र की सुन्दरता का दर्शन हो गया तो। हा पुण्डरीक ते मदः क्व ? = हा कमल तुम्हारी सुन्दरता कहाँ ? यदि तत्तेजः दृष्टः (तर्हि) = अगर उसके तेज का दर्शन हो गया तो । हे सहस्रकर ! ते तेजस्विताया: का कथा = हे सूर्य! तुम्हारी तेजस्विता की कथा कहाँ। नित्यानन्दमयाननं = यदि उसका नित्य आनन्दमय मुख देख लिया तो । हे विधो! ते शब्द साम्येन किम् = हे चन्द्र तुम्हारे शब्दसाम्य का कोई तात्पर्य नहीं ?

अनुवाद – यदि श्रीकृष्ण की महिमा का दर्शन कर लिया गया तो भक्त को यह विश्व अति सूक्ष्म दिखाई देता है । अगर उसके नेत्र की सुन्दरता का दर्शन हो गया तो हा कमल तुम्हारी सुन्दरता कहाँ ? अगर उसके तेज का दर्शन हो गया तो हे सूर्य ! तुम्हारी तेजस्विता की कथा कहाँ यदि उसका नित्य आनन्दमय मुख देख लिया तो हे चन्द्र ! तुम्हारे शब्दसाम्य का कोई तात्पर्य नहीं ?

इत्थं चेतसि सम्प्लुते भगवतो माहात्म्यसंभावनैः
प्रस्तोतुं विभुमक्षमा निरुपमानन्दाश्रुवारोऽसृजत।
श्रद्धाभक्तिरचञ्चलाशुफलदेत्युच्चौर्जुघोषेव सा
भूरिक्लेशकराः पराश्च नियमा व्यर्थाः कलावत्यपि।।42।।

अन्वय – इत्थं भगवतः माहात्म्यसम्भावनैः चेतसि सम्प्लुते विभुं प्रस्तोतुम् अक्षमा निरुपमानन्दाश्रुवारः असृजत्। सा अचञ्चला श्रद्धाभक्तिः आशु फलदा इति भूरिक्लेशकरा पराश्च नियमाः कलौ व्यर्था इत्यपि जुघोषेव।

शब्दार्थ – इत्थं भगवतः= इस प्रकार भगवान् की। माहात्म्यसम्भावनैः = माहात्म्य सम्भावना से। चेतसि सम्प्लुते = मन के विह्वल हो जाने पर । विभुं प्रस्तोतुम् अक्षमा = वाणी से प्रभु के गुणगान में असमर्थ। निरुपमानन्दाश्रुवारः= परमानन्द के आसुओं को । असृजत् = बहाने लगी । सा अचञ्चला श्रद्धाभक्तिः = स्थिर श्रद्धा भक्ति ।आशु फलदा = शीघ्र फलप्रद होती है। भूरिक्लेशकरा पराश्च नियमाः = उससे भिन्न नियम कलियुग में । व्यर्था = व्यर्थ हैं। इत्यपि जुघोषेव = अपने आचरण से मीरा इस प्रकार की घोषणा सी करने लगी।

अनुवाद – इस प्रकार भगवान् की माहात्म्य सम्भावना से मन के विह्वल हो जाने पर वाणी से प्रभु के गुणगान में असमर्थ मीरा परमानन्द के आसुओं को बहाने लगी । स्थिर श्रद्धा भक्ति शीघ्र फलप्रद होती है, उससे भिन्न नियम कलियुग में व्यर्थ हैं । अपने आचरण से वह मीरा इस प्रकार की घोषणा सी करने लगी।

13.3 सारांश

आधुनिक संस्कृत साहित्य और साहित्यशास्त्र के पाठ्यक्रम के तृतीय खण्ड से सम्बन्धित इस इकाई में आपने पण्डिता क्षमाराव के जीवन परिचय और उनकी

रचनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करते हुए, मीरालहरी के प्रथम खण्ड के श्लोक संख्या 01 से लेकर 22 तक में दिए गए वर्णनों का श्लोकों के भावार्थ के रूप में अध्ययन किया। साथ ही शब्दार्थ के रूप में भी आपको विभिन्न जानकारियॉ प्राप्त हुईं। तीसरी इकाई मीरालहरी के द्वितीय खण्ड अथवा उत्तर खण्ड के श्लोक संख्या 01 से लेकर 22 तक में आपने मीरा के जीवन की विभिन्न गतिविधियों के बारे में जाना। साथ ही आपने यह भी जाना की मीरा का जीवन पारिवारिक रूप में किस प्रकार रहा। पति के प्रयाण के बाद का मीरा का जीवन कितने संघर्षों में रहा, कितने प्रकार के कष्टों से मीरा का जीवन व्यतीत हुआ आदि इत्यादि तथ्यों को आपने भली भॉति जाना। अंतिम इकाई में मीरा के जीवन की दुर्दशा के साथ–साथ मीरा का दुबारा से वृन्दावन पहुंचना, तुलसीदास को पत्र लिखना तथा उनका उत्तर प्राप्त करना, गृह त्याग, तपस्या, भक्तों के लिए मीरा का उपदेश तथा भक्ति के फलों का वर्णन किया गया है जिनके अध्ययन से आप इन सभी तथ्यों से परिचित होकर इनका उल्लेख करने में सक्षम हो सकेंगें।

13.4 शब्दावली

दुर्दशा– जीवन में आने वाले नाना प्रकार के कष्ट

गृहत्याग– घर छोड़ देना

प्रेषित – भेजा हुआ

भक्ति– ईश्वर के प्रति प्रेम और सेवा

13.5 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. मीरा लहरी , पण्डिता क्षमा राव , मुम्बई
2. संस्कृत साहित्य का समग्र इतिहास, राधावल्लभ त्रिपाठी, न्यू भारतीय बूक कार्पोरेशन, नयी दिल्ली, २०१८
3. वक्रोक्तिजीवित, रमाकान्त पाण्डेय, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर

13.6 बोध प्रश्न

1. इस इकाई के आधार पर मीरा की भक्ति का वर्णन कीजिये।
2. मीरा को उनके देवर ने किस प्रकार सताया , लिखिये।
3. तुलसीदास के मीरा के लिये लिखे गये पत्र का भावार्थ लिखिये।
4. भक्ति की दशा में मीरा की अवस्था का वर्णन कीजिये।
5. इस इकाई का सार अपने शब्दों में लिखिये।